मिशन शिक्षण संवाद

काव्यरुप

पर्यावरण

(जूनियर कक्षाओं हेतु)

बेसिक काव्य सृजन

काव्य सृजन

शिखा वर्मा (इं0प्र0अ0)
पू0मा0वि0 स्योढ़ा, बिसवाँ, सीतापुर

पाठ-01 पर्यावरण को जानें भाग-01

दो शब्दों से मिलकर है ,
बना शब्द पर्यावरण।
'परि' कहलाता चारों ओर,
'घिरा हुआ' कहलाता 'आवरण'।।

चारों ओर हैं जो भी चीजें,
पानी, हवा, मिट्टी और धूप।
पेड़-पौधे, जीव-जन्तु सभी हैं,
पर्यावरण का बनाते स्वरुप।।

पृथ्वी पर रहने वाले,
सभी जीवों का इसी से अस्तित्व।
भोजन, कपड़े और आवास का,
इसी से है मिलता हर तत्व।।

पर्यावरण के दो भाग होते,
प्राकृतिक और मानवीय।
प्राकृतिक में वे चीजें होती,
जो धरती पर हैं ईश्वरीय।।

नदी, पहाड़ी, झीलें, झरने,
सूर्य, चन्द्र और जीव-जन्तु।
प्राकृतिक या भौतिक कहलातीं,
वे सब चीजें जो प्रकृति प्रदत्त।।

गाँव, शहर, पंचायत, घर-परिवार,
रेल, थाना, डाकघर, विद्यालय, बाजार।
कारखाने, मोटर, अस्पताल और संस्थाएं,
आदि मिलकर सामाजिक पर्यावरण बनाएँ।।

पाठ-01 पर्यावरण को जानें भाग-02

प्राकृतिक पर्यावरण के भी होते दो भाग,
जैविक और अजैविक कहलाते हैं।
जैविक में पेड़-पौधे, मानव और जीव जन्तु,
अजैविक में भूमि, जल, वायु आदि तत्व आते हैं।।

इन तत्वों से ही मिलकर,
प्राकृतिक पर्यावरण बनता है।
इन सभी घटकों का मिलना,
एक-दूसरे को पूर्ण करता है।।

हरे पेड़ अपना भोजन,
ऊर्जा के द्वारा स्वयं बनाते हैं।
इसीलिए सारे पेड़-पौधे,
स्वपोषी कहे जाते हैं।।

जीव-जन्तु भोजन की खातिर,
पेड़-पौधों पर होते निर्भर।
भोजन पाते पेड़-पौधों से,
परपोषी कहलाते मिलकर।।

पौधों से जो भोजन लेते,
वे शाकाहारी कहलायें।
और दूसरे जीवों को खाकर,
मांसाहारी जीव बन जाएँ।।

सभी जीवों का शरीर अन्त में,
हो विलीन मिट्टी में जाता।
पुनः-पुनः क्रम चलता रहता,
प्राकृतिक पर्यावरण चक्र है बनता।।

पाठ-02 हमारे प्राकृतिक संसाधन भाग-01

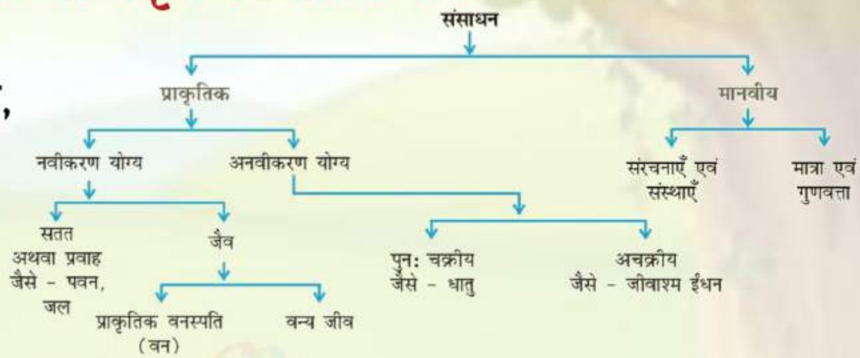

दैनिक जीवन में जो साधन,
हैं काम हमारे आते।
जिनके द्वारा हम अपने,
कामों को सरल हैं बनाते।।

जैसे पानी, हवा और भोजन आदि,
ये सभी प्राकृतिक संसाधन कहलाते।
हवा साँस में लेते, पानी से प्यास बुझाते,
सिंचाई करते, कपड़े धोते और नहाते।।

भूमि हमें उपजाऊ मिट्टी सुलभ कराती,
जिसमें भोजन की खातिर फसलें लहराती।
तेल, कोयला, गैस आदि सब ईंधन होते,
यातायात के साधन आदि हैं जिनसे चलते।।

प्राकृतिक संसाधनों ने ही मानव के,
जीवन को है आसान बनाया।
आदि मानव से लेकर आधुनिक,
युग का का सभ्य इन्सान बनाया।।

प्रकृति प्रदत्त जिन चीजों में,
हम बदलाव नहीं कर सकते।
हवा, पानी और मिट्टी आदि को,
मूल रूप में हम प्रयोग करते।।

प्राकृतिक चीजें कहलातीं सब,
प्रकृति ने दिए निःशुल्क उपहार।
जिनके बिना जीवन है असम्भव,
सजा है यह सुखमय संसार।।

इस धरती पर ऊर्जा का है,
सूरज सबसे स्रोत बड़ा।
जीवों के भोजन को बनाने,
में सहायक है सदा बड़ा।।

विटामिन 'डी' शरीर को देता,
जलवायु नियन्त्रण करता।
कपड़े सुखाते धूप में इसकी,
जलचक्र बनाए रखता।।

पाठ-02 हमारे प्राकृतिक संसाधन भाग-02

इस धरती के चारों ओर है,
वायु का रहता हमेशा पहरा।
अनुभव कर सकते बस इसको,
वायु बिना कोई पल भर न ठहरा।।

जल के बिना नहीं सम्भव जीवन,
कहलाता है 'जल ही जीवन'।
मानव शरीर में होता 70 प्रतिशत,
बहता तन में तरल रक्त बन।।

अपशिष्ट निकाले और खाना पचाए,
पानी ही हर प्राणी की प्यास बुझाए।।
सीमित हैं संसाधन ध्यान में रखना,
जल ही फल, सब्जी और अनाज उगाए।।

जल बिन मानव और जीवों की,
जीवन की कल्पना असम्भव सी।
जितना हो सके, करें संरक्षित,
पृथ्वी पर जल के स्रोत हैं सीमित।।

वर्तमान में बढ़ती दर है,
जनसंख्या एक विकट समस्या।
संसाधन हो रहे कम हैं,
और बढ़ती जाती जनसंख्या।।

पाठ-02 हमारे प्राकृतिक संसाधन भाग-03

वायु और जल ही के जैसे,
भूमि भी है आवश्यक संसाधन।
भूमि बिना भोजन मिले कैसे?
भूमि से ही है सम्भव जीवन।।

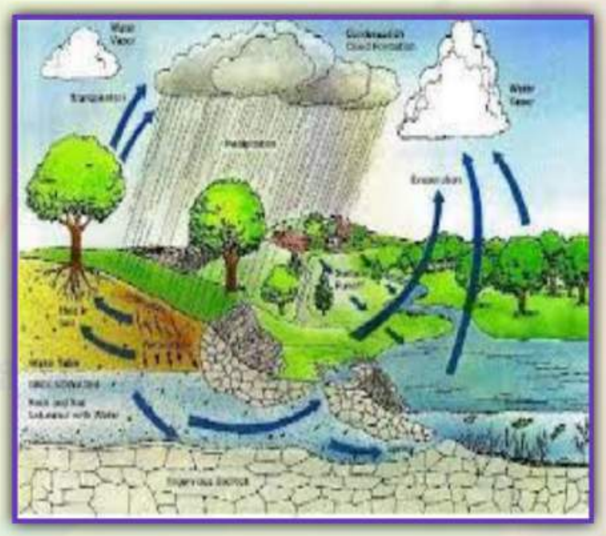

फल, सब्जी, अनाज, औषधियाँ,
कपड़े और इमारती लकड़ियाँ।
पेड़-पौधों से ही सब पाते,
जीव-रक्षक चीजें जुटाते।।

वन और खेती की खातिर है,
भूमि का होना बहुत जरूरी।
जल और खनिज आदि की जरूरत,
सबके लिए भूमि ही करे पूरी।।

कृषि, उद्योग-धन्धे बढ़ने से,
संसाधनों का होता असीमित दोहन।
होगा जो हम सबकी खातिर,
खतरनाक, पर्यावरण असन्तुलन।।

संसाधनों का महत्व समझकर,
इनको बचाने का प्रयास करें हम।
प्रकृति हमारी सदा सहायक,
इसे सजाने का उपाय करें हम।।

पाठ-03 अपशिष्ट एवं उसका निस्तारण भाग-1

मानव और अन्य जीवों की,
होती हैं जो दैनिक क्रियाएँ।
इनके फलस्वरूप अनुपयोगी,
निकले पदार्थ अपशिष्ट कहलाएँ।।

बोलचाल की भाषा में हम,
इसको कहते हैं 'कचरा'।
ऑफ़िस, कारखानों, अस्पतालों,
घरों के बाहर रहता बिखरा।।

यातायात साधनों, कल कारखानों से,
परमाणु-केन्द्रों, घर, खेत, दुकानों से।
ठोस, द्रव, गैस अवस्थाओं में निकलते,
अपशिष्ट पदार्थ प्रयुक्त सामानों से।।

ठोस अपशिष्ट वे कहलाते हैं,
जो बेकार चीजें घरों से निकालते हैं।
प्लास्टिक और लोहे के अनुपयोगी सामान।
सब्जियों के छिलके, टूटे काँच के बर्तन तमाम।।

कारखानों की राख और फसलों के अवशेष,
ये अपशिष्ट वातावरण में करते रहते प्रवेश।
लोग भूमि, जल और वायु में विसर्जन करते,
जिससे ये पर्यावरण को हैं प्रदूषित करते ।।

पाठ-03 अपशिष्ट एवं उसका निस्तारण भाग-2

ठोस अपशिष्ट के दो हैं प्रकार, सुनो बताते,
जैविक और अजैविक कचरा जो कहलाते।
जो कचरा सड़-गल जाता, जैविक कहलाये,
और नष्ट न होने वाला अजैविक कहलाये।।

पालीथीन, रासायनिक कचरा व धातुओं के टुकड़े,
अजैविक कचरा कहलाते,रहते इधर-उधर पड़े।
गलने और न गलने वाले, कचरे को अलग रखें,
दोनों तरह की पहचान कर अलग-अलग लिखें।।

कचरा स्वच्छ जल में घुला हुआ जो रहता,
नाली और सीवर का हो गन्दा पानी बहता,
उद्योग-धन्धों और बिजली उत्पादन केन्द्रों से,
है जो पानी निकलता, द्रव अपशिष्ट वही बनता।।

हवा में मिला जो कचरा, गैसीय अपशिष्ट कहलाता,
कारखानों की चिमनी का धुआँ धधकता।
कूड़े-कचरे के सड़ने से उठी दुर्गन्ध,
चूल्हे, अँगीठी, बीड़ी जलने की हो गन्ध।।

अपशिष्ट पदार्थों के हैं स्रोत निम्न प्रकार,
घर, ऑफिस से निकलता कचरा एक प्रकार।
कृषि, चिकित्सा, औद्योगिक क्षेत्रों से दूसरा,
और प्राकृतिक घटनाओं, युद्ध आदि से हो तीसरा।।

पाठ-03 अपशिष्ट एवं उसका निस्तारण भाग-03

सभी तरह के अपशिष्ट इन स्रोतों से निकलकर,
जीव-जन्तुओं के स्वास्थ्य पर करते बुरा असर।
भोपाल की फैक्ट्री यूनियन कार्बाइड पेस्ट्रीसाइड,
1984 में गैस रिसी थी मेथिल आइसो सायनाइड।।

सिरदर्द, साँस फूलना आदि लक्षणों के कारण,
लाखों लोगों की जान गई थी होकर प्रभावित।
फसलों में प्रयुक्त रसायन व कीटनाशक,
होते हैं जीवों के लिए बहुत हानिकारक।।

पारा जैसी तरल धातु जो हवा में घुलकर,
गुर्दों, फेफड़ों, पाचन तन्त्र को करती संक्रमित।
तेजी से बढ़ती जनसंख्या और बदलती जीवनशैली,
'प्रयोग करो और फेंको' की जो संस्कृति फैली।।

गाँव से लेकर शहरों तक फैली अव्यवस्था,
खतरों और रोगों को दावत देती व्यवस्था।
कूड़े-कचरे का नहीं होता सुरक्षित निवारण,
बढ़ा रहे बीमारी और संक्रमण के कारण।।

Refuse, Reduce, Re-use, Recycle,
सोंच-समझकर ये चार R यदि प्रयोग में लाएँगे।
हानिकारक वस्तु को प्रयोग न करें, कम प्रयोग करें,
चीजों का पुनः चक्रण कर, पुनः प्रयोग में लाएँगे।।

कूड़े-कचरे का सुरक्षित निपटान करके,
वातावरण को सुरक्षित-शुद्ध बनाएँगे।
रोग और संक्रमण-मुक्त होने को संकल्पित,
वृक्षारोपण कर हरियाली धरती पर लाएँगे।।

पाठ-04 जल भाग-01

जल एक प्रमुख प्राकृतिक संसाधन,
जिस पर जीवों का जीवन निर्भर।
जल से ही है धरा पर जीवन,
कहलाता है जल ही जीवन।।

जल के तीनों रूप निराले,
ठोस ,गैस और द्रव में बह्रा ले।
ब्रम्हाण्ड के ग्रह केवल धरती पर,
मिलती जलधारा है झर-झर।।

पृथ्वी पर जल का भण्डारण,
कहलाता है सुनो जलमण्डल।
झीलों, नदियों, जलाशयों और,
महासागरों में मिलता जल।।

पहाड़ों पर जमी बर्फ है ठोस,
और तरल बहे नदियों आदि में।
वाष्प रूप में विद्यमान जो,
वायु मण्डल में गैस रूप में।।

कुल जल का 97 प्रतिशत,
जल है खारा समुद्री जल रूप में।
पीने योग्य नहीं जो होता,
घुली लवणता और अशुद्धियाँ इसमें।।

नदी, झील, तालाबों, झरनों,
आदि का जल है मीठा होता।
हिमनद, झरनों और वर्षा से,
मिलता यह जल जीवन देता।।

गंगा, यमुना और सरस्वती,
तीनों प्रयागराज में मिलती।
उत्तर-प्रदेश में बहने वाली,
सबसे बड़ी नदियाँ कहलाती।।

पाठ-04 जल भाग-02

स्वच्छ और निर्मल नहीं रहा अब,
इन सब नदियों का शीतल जल।
मानव की लापरवाही ने,
किया प्रदूषित है गंगाजल।।

धरती पर पाया जाने वाला,
जल जो पहुँचता भूमि के अन्दर।
भूमिगत जल कहलाता है वह,
पहुँचता है जो जल रिस-रिसकर।।

मानव ने निज स्वार्थ की खातिर,
जल-स्रोतों का किया अति दोहन।
घटा है जल का धरा से स्तर,
खतरे में है मानव जीवन।।

HOW WE USE WATER

कुएँ और नदियों के जल को,
करें प्रयोग सुरक्षित ढंग से।
सीमित स्रोतों का हो दोहन,
सभी के द्वारा मितव्ययिता से।।

पृथ्वी की वह सतह पहाड़ी,
ढकी है ओढ़े बर्फ़ की चादर।
कहलाता है रूप वह हिमनद,
ध्रुवीय क्षेत्रों से आती बर्फ पिघलकर।।

मानव जीवन की गतिविधियाँ,
सभी हैं निर्भर केवल जल पर।
खेत, बाग,और फसलों का भी,
होना सम्भव, निर्भर जल पर।।

पाठ-04 जल भाग-03

ताप विद्युत संयन्त्र में जल से,
विद्युत ऊर्जा बनाई जाती।
कारखानों और फैक्ट्रियों में भी,
दवा इत्यादि बनायी जाती।।

वाटरपार्क, झील और झरने,
हैं जो साधन मनोरंजन के।
राफ्टिंग और तैराकी जैसे,
जल पर निर्भर खेल हैं जन के।।

साफ-सफाई, भोजन पकाना,
बागवानी और पशु पालना।
पीने से लेकर पानी के,
लाखों हैं उपयोग, समझना।।

जल बिन सम्भव नहीं हैं बच्चों!
धरती पर जीवों का जीवन।
जल को कभी न व्यर्थ बहाना,
जल ही है इस धरती का धन।।

नहीं हैं धरती जल बिन कुछ भी,
और न सम्भव जल बिन जीवन।
जल ही धन है, जीवन जल है,
जल ही है हम सबका जीवन।।

नहीं करें बेकार इस जल को,
व्यर्थ में जल को नहीं बहाएँ।
करें सुरक्षित बूँद-बूँद जल,
आओ मिलकर जल को बचाएँ।।

पाठ-05 जल संचयन एवं पुनर्भरण भाग-01

गयी भरतपुर दादी के घर।
गर्मी की छुट्टी में रानी।
सुबह उठी तो माँगा उसने,
नहाने की खातिर था पानी।।

घर के पास लगा जो नल था,
पानी भरने को पहुँची जब।
लाइन लगे लोग थे पहुँचे,
रानी ने उनको देखा तब।।

भरते-भरते ही नल से था,
बन्द हुआ पानी का आना।
परेशान थे लोग सभी जब,
देखा था पानी का जाना।।

बोली रानी दादी माँ से,
क्यों पानी की है ये जटिलता?
मेरी मैडम बतलाती हैं,
पृथ्वी पर जल की उपलब्धता।।

इस धरती के तीन चौथाई,
भाग पर भरा हुआ है पानी।
जिस पानी का 97 प्रतिशत,
होता है सुनो, खारा पानी।।

भू-जल और भूमि सतही जल,
को हम सब प्रयोग में लाते।
पीते, नहाते, धोते और हैं,
जानवरों को नहलाते-पिलाते।।

पानी संचित करके रखते,
घर के सभी बर्तनों में भरकर।
पोखर, झील, बाँध में वर्षाजल,
इसी प्रकार रखते जल संचयन कर।।

पाठ-05 जल संचयन एवं पुनर्भरण भाग-02

भू-जल के घटते स्तर को,
सभी सुधारें आओ मिलकर।
जल स्तर को ऊपर लाएँ,
पुनर्भरण व वर्षा-जल संचयन कर।।

भू-जल के गिरते स्तर को,
आओ कुछ विधियों से सुधारें।
'पुनर्भरण पिट' में पानी भर,
वर्षा का जल पुनः पखारें।।

चैक डैम, कन्टूर व गैबियन बाँध,
जल-संचयन की विधियाँ बेहतर।
इनसे शहरों में करें जल सचित,
पक्के घरों की पक्की छत पर।।

जल को स्वच्छ-सुरक्षित रखने,
का करें सब प्रयास मिल-जुलकर।
जल की बूँदें व्यर्थ न जाएँ
जीवन-शैली जिएँ बदलकर।।

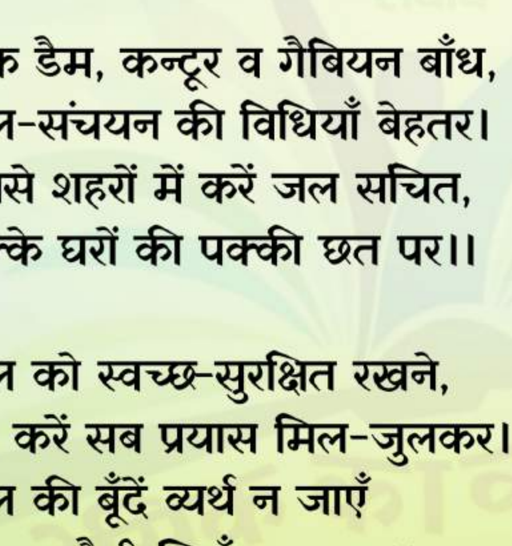

झील, नदी, तालाब, कुओं का,
पानी न हम दूषित होने दें।
जल में प्रवाहित करें न कुछ भी,
जल को व्यर्थ न हम बहने दें।।

कुओं, झील, नदियों की मिलकर,
नियमित करते रहें सफाई।
बूँद -बूँद जल करें संरक्षित,
बन्द कुओं की करें सफाई।।

करें मरम्मत हो सचेत बन,
रिसते और टपकते नल की।
व्यर्थ बहे न एक बूँद भी,
करें सुरक्षा बहते जल की।।

जल है दुर्लभ वस्तु धरा पर,
जल है हम जीवों का जीवन।
22 मार्च को हर वर्ष मनाते,
'विश्व जल दिवस' सभी सुधीजन।।

पाठ-06 मिट्टी और वायु भाग-01

गयी बिताने छुट्टी नैना,
माता-पिता संग अपने गाँव।
देख खुश हुई वातावरण में,
वृक्षों की शीतल छाँव।।

पीले फूल खिले सरसों के,
हवा सुगन्धित ठण्डी बहती।
बैठी बाग की मेड़ किनारे,
हुई चकित देख मिट्टी उड़ती।।

नैना सुनती रही कहानी,
बतलाओ तुम अपना काम?
हवा, सूर्य और पानी पाऊँ,
तो मैं उगा दूँ पौधे तमाम।।

पूँछा मिट्टी से 'तुम कौन' सयानी?
बोली मिट्टी 'मैं हूँ मिट्टी रानी,
भूमि की सबसे परत ऊपरी।
जिसमें पोषकता है सारी।।

बोली नैना 'क्यों दिखती हो'?
अलग-अलग रूपों में प्यारी!
'कहीं लाल, पीली और काली,
कहीं लैटराइट मैं हूँ न्यारी'।।

जिस मिट्टी में बालू के कण,
बड़े-बड़े होते हैं अधिकतर।
बलुई मिट्टी मैं कहलाती,
पहचानो तुम सोच-समझ।।

जिस मिट्टी में छोटे कण हों,
बालू की मात्रा हो कमतर।
चिकनी मिट्टी वह कहलाती,
देखो, समझो जान-बूझकर।।

जिस मिट्टी के कण हों मध्यम,
वह मिट्टी है 'सिल्ट' कहलाती।
जल, ऑक्सीजन, पोषक तत्वों से,
मैं हूँ ताकतवर बन जाती।।

नैना सुनती रही कहानी,
बतलाओ तुम अपना काम?
हवा, सूर्य और पानी पाऊँ,
तो मैं उगा दूँ पौधे तमाम।।

पाठ-06 मिट्टी और वायु भाग-02

फिर पूँछा, नैना ने बताओ?
पेड़-पौधों के कैसे आती हो काम?
बोली मिट्टी, मेरे ही सहारे,
रहते खड़े पेड़-पौधे सारे।।

खाद और पानी जो सब डालते,
वह मैं पौधों तक पहुँचाती।
अवशोषित करती पोषक तत्वों को,
पौधों तक मैं नमी पहुँचाती।।

सोंखे गये उस जल के द्वारा,
बढ़ता है भूगर्भ जल स्तर।
पीने के लिए काम है आता,
और यही जल स्वच्छ होकर।।

मेरी ही ले मदद बनाते,
लोग गाँव में घर हैं सुन्दर।
पेड़ पौधों के साथ साथ मैं,
बनाती हूँ सब जीवों के घर।।

साँप हों, चूहे या खरगोश,
बिल, बाँबी या बरोज बनाते।
केंचुआ, दीमक, नेवला, मेंढक,
आदि सभी घर मुझसे बनाते।।

रहते जीव सब मेरे ही ऊपर,
शेर, भेड़िया और नीलगायें।
बारहसिंगा, हिरन, जिराफ,
मेरे ऊपर बनी जो गुफाएँ।।

मैं उपयोगी सबकी खातिर,
पर मानव करता अन्याय।
घास के मैदानों को काट किया,
वन और वनस्पतियाँ समाप्तप्राय।

लगातार मेरे कटने से,
पोषक तत्व मेरे बह जाते।
वायु और जल के साथ लिपटकर,
उपजाऊ तत्व नहीं रह जाते।।

मेरे संरक्षण के सबको,
मिलकर करने होंगे उपाय।
करें वृक्षारोपण, ऊँची मेड़बन्दी,
जैविक खाद प्रयोग में लाय।।

पाठ-06 मिट्टी और वायु भाग-03

वायु

कई तरह की गैसों का मिश्रण,
होती है यह वायु, समझ लो।
धरती को इस चारों तरफ से,
घेरे है, यह वायु समझ लो।।

चारों तरफ जो फैला हुआ है,
कहलाता 'वायुमण्डल' बच्चों!
गुरुत्वाकर्षण शक्ति के कारण,
टिका धरा संग वायुमण्डल बच्चों!

वायु के कारण ही धरती पर,
जीवों का है जीवन सम्भव।
बिना वायु के इस धरती पर,
चाँद की तरह होता जीवन असम्भव।।

नाइट्रोजन, ऑक्सीजन, ऑर्गन,
कार्बन-डाइऑक्साइड आदि गैसें।
वायु मण्डल के भीतर समाहित,
जलवाष्पकण, धूल, अन्य गैसें।।

इस धरती पर वायुमण्डल से,
आती होकर ऊर्जा सूर्य की।
धरती पर सबसे बड़ा स्रोत सूर्य है,
सबको ऊर्जा मिलती सूर्य की।।

अपने क्रियाकलापों द्वारा मानव,
करता अत्यधिक है जब दोहन।
हो जाती है प्रकृति अनियन्त्रित,
वायु मण्डल का बिगड़ता सन्तुलन।।

उद्योग-धन्धों, कारखानों की जो,
चिमनियों से है निकलता प्रदूषण।
कूड़े-कचरे, शवों के सड़ने से,
करते दूषित परमाणु परीक्षण।।

पर्यावरण में होता रहा यदि,
मानव का हस्तक्षेप इसी समान।
तो हो जाएगी धरती भी एक दिन,
चन्द्रमा के जैसे ही वीरान।।

पाठ-06 मिट्टी और वायु भाग-04

जीवन और ऑक्सीजन

श्वसन के बिना जीव-जन्तुओं के,
जीवन की नहीं कल्पना होगी।
यदि ऑक्सीजन नहीं मिले तो,
धरती पर साँसें भी न होंगी।।

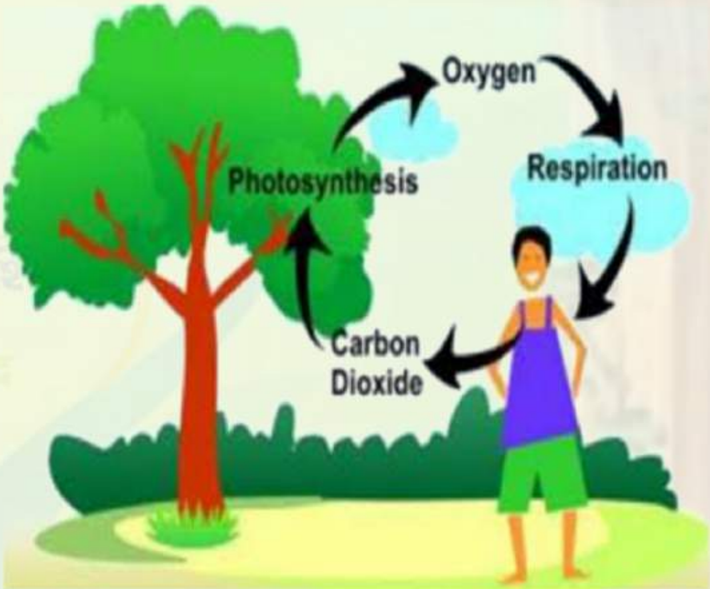

साँस लेने में सब जीवों की,
जरूरत है ऑक्सीजन गैस।
पुनः चक्रण में सोंख लेते हैं पेड़,
कार्बन डाई ऑक्साइड गैस।।

मिटती रहेगी इसी तरह से,
यदि जंगल और हरियाली ।
बड़ी समस्या में आएँगी,
धरती की नस्लें निराली।।

कार्बन डाई ऑक्साइड गैस,
पेड़-पौधों के लिए बहुत जरूरी।
प्रकाश संश्लेषण की क्रिया से पौधे,
करते भोजन की आवश्यकता पूरी।।

धरती तभी बच पाएगी जब,
मानव बदलेगा निज व्यवहार।
अन्धाधुन्ध किया जिसका दोहन,
उस प्रकृति को देगा फिर से प्यार।।

पाठ-07 वन एवं वन्य जीव भाग-01

मोहन एक कहानी पढ़ता,
और एक वन में शेर था रहता।
'वन' होते क्या समझ न पाया,
तभी पिता ने ये समझाया।।

गमले में जो लगे हैं पौधे,
वन वे नहीं कहे जाते हैं।
सघन रूप में, बड़े क्षेत्र में,
उगे हों, वे वन कहलाते हैं।।

वन में जीव-जन्तु, वनस्पतियाँ,
बहुतायत पाये जाते हैं।
जीवन है इन पर ही निर्भर,
प्राकृतिक संसाधन कहलाते हैं।।

वन मानव के जीवनदाता,
वनों से मिलते हैं फल-फूल।
वनों से ही मिलता माल कच्चा,
देते हैं वन संसाधन भरपूर।।

कागज, रेशम, दियासलाई,
चाहे व्यापार कोई हो भाई।
रबर, खिलौने आदि का सामान,
सब चीजें हैं वनों से पायी।।

फल, फूल, ईंधन, जड़ी-बूटियाँ,
फर्नीचर की इमारती लकड़ियाँ।
टायर, कागज,खिलौने, कपड़े,
या हों बनानी लाख की चूड़ियाँ।।

जीवन-रक्षक सारी चीजें,
मिलता सब-कुछ इन्हीं वनों से,
और हमारी मिट्टी की सुरक्षा,
होती समझो इन्हीं वनों से।।

चील, कबूतर, तोता, तीतर,
रहते वन में घोंसले बनाकर।
वन हमेशा लाभकारी हैं होते,
रखते पर्यावरण सन्तुलित कर।।

पाठ-07 वन एवं वन्य जीव भाग-02

तेंदुआ, चीता, हिरन, सियार,
वन में पाते शेर हैं आश्रय।
वन को हानि पहुँचाने वाले,
लोगों को होता इनका भय।।

शेर, हिरन, चीते का करते,
हैं कुछ लोग अवैध शिकार।
बेचते अंग निरीह पशुओं के,
घटती संख्या इनकी लगातार।।

वन्य जीव अभयारण्यों में,
रखते इन पशुओं को सुरक्षित।
इनकी लुप्तप्राय प्रजातियाँ,
की जाती हैं यहाँ संरक्षित।।

कुकरैल, लखनऊ में स्थापित है,
लुप्तप्राय प्रजातियों का प्रजनन केन्द्र।
इटावा के फिशर वन में बन रहा,
लायन सफारी, बब्बर शेर प्रजनन केन्द्र।।

वनों को सुरक्षित रखने के लिए,
सरकारें करती पूरा प्रयास।
'ऑपरेशन ग्रीन योजना' के तहत,
होता वृक्षारोपण है खास।।

सन् 1952 से हम मनाते,
वन-महोत्सव हैं हर बार।
21 मार्च को विश्व वन दिवस,
हम सभी मनाते लगातार।।

अपने क्रियाकलापों के हित,
काटते रहेंगे हम जो ये वन।
होगी सूनी धरती एक दिन,
हो जाएगी धरती निर्जन।।

वन और वन्य जीवों के प्रति हम,
रखें सभी यदि प्रेम का भाव।
मिलती रहेगी हमें हरियाली,
और मिलेगी वनों की छाँव।।

पाठ-08 पारिस्थितिकी तन्त्र भाग-01

प्राकृतिक वातावरण में रहने वाले,
जीवों के रहने के हैं कुछ मन्त्र।
किन परिस्थितियों में रहते हैं सब?
यह कहलाता है पारिस्थितिकी तन्त्र।।

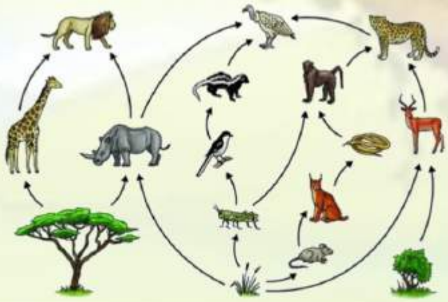

जिन परिस्थितियों में रहते जीव,
जो एक-दूजे को प्रभावित करते।
इन परिस्थितियों का अध्ययन,
पारिस्थितिकी (इकालॉजी) में करते।।

ये पारिस्थितिकी तन्त्र ही,
कहलाता है 'इकोसिस्टम'।
इसका स्वरूप हर जगह बदला,
मिलता सदैव यह भिन्नतम।।

सजीव और निर्जीव घटक मिल कर,
यह पारिस्थितिकी तन्त्र बनाते हैं।
कहीं विशाल समुद्र, नदियाँ हैं,
तो कहीं मैदान, रेगिस्तान नजर आते हैं।।

सजीव घटक के अन्तर्गत सूक्ष्म जीव,
पेड़, पौधे, पशु, पक्षी, मानव आते हैं।
एक-दूसरे का पोषण कार्य करते,
और ये तीन भागों में बाँटे जाते हैं।।

ये तीन भाग उत्पादक, उपभोक्ता,
और अपघटक कहे जाते हैं।
एक-दूसरे पर निर्भर रहकर,
पारिस्थितिकी तन्त्र मजबूत बनाते हैं।।

उत्पादक वे हैं कहलाते,
जो अपना भोजन स्वयं बनाते।
सूर्य के प्रकाश में बनाकर भोजन,
हरे पौधे स्वपोषी उत्पादक कहलाते।।

जो अपने भोजन की खातिर,
रहते हैं पेड़-पौधों पर निर्भर।
परपोषी, उपभोक्ता कहलाते,
जीवित रहते पौधों से भोजन पाकर।।

सजीव प्राणियों के मृत शरीर को,
रहते हैं जीवित जो खाकर।
बैक्टीरिया, कवक आदि सब,
अपघटक होते हैं पृथ्वी पर।।

पाठ-08 पारिस्थितिकी तन्त्र भाग-02

निर्जीव घटक

जल, स्थल और वायु मण्डल,
होते हैं निर्जीव घटक।
पर्यावरण को सन्तुलित करते,
मिलकर ये सभी घटक।।

जीवों के भोजन से सम्बन्धित,
बनती है एक आहार श्रंखला।
एक सिरे पर उत्पादक होता,
दूसरे पर सर्वोच्च उपभोक्ता।।

सूर्य

आहार श्रंखलाओं के जुड़ने से ,
बनता है आहार जाल।
पारिस्थितिकी तन्त्र के लिए आवश्यक,
होती है सूर्य की ऊर्जा कमाल।।

सूर्य की ऊर्जा से ही बनाते,
हरे पौधे हैं अपना भोजन।
हम मानव भी पाते सूर्य से,
बनने वाली ऊर्जा का ईंधन।।

सूर्य की ऊर्जा से ही पकती,
खेतों में फसलें हैं लहराती।
सौर ऊर्जा भोजन पकाने,
प्रकाश जलाने के भी काम आती।।

पाठ-08 पारिस्थितिकी तन्त्र भाग-03

अनुकूलन

किसी विशेष वातावरण में रहना,
वंशवृद्धि के लिए बिताना जीवन।
उनकी शारीरिक संरचना और क्रियात्मक,
स्थायी परिवर्तन कहलाता है 'अनुकूलन'।।

जो घटक वातावरण के परिवर्तनों के,
बन नहीं पाते हैं अनुकूल।
नष्ट हो जाते, डायनासोर के जैसे,
आकार और भोजन था जिसका प्रतिकूल।।

मौसम के अनुकूल बनाए रखने को,
साइबेरिया, आस्ट्रेलिया से उड़कर आते हैं।
ऐसे पक्षी ठण्डे मौसम में रहने को,
देश हमारे प्रवासी पक्षी बनकर आते हैं।।

सजीव या निर्जीव घटक के घटने से,
पारिस्थितिकी तन्त्र पर पड़ता कुप्रभाव।
होंगे जब संवेदनशील प्रकृति के बारे में,
पर्यावरण असन्तुलन से होगा बचाव।।

घर, विद्यालय, सड़क किनारे,
वृक्ष लगे हों न्यारे-न्यारे।
स्वच्छ रहें गलियाँ-चौबारे,
नदी और तालाब किनारे।।

न करने दें किसी व्यक्ति को,
भोले वन्य जीवों का शिकार।
कानूनी अपराध ये माना जाता,
यदि देता कोई जीव को मार।।

वायु, जल और भूमि का करें,
मिलकर आओ हम संरक्षण।
पर्यावरण बचाना है तो,
आओ करें सब वृक्षारोपण।।

पाठ-09 पर्यावरण प्रदूषण: कारण एवं प्रभाव

भाग-01

मिट्टी, पानी और हवा बिन,
जीवन असम्भव होता अपना।
पर्यावरण प्रदूषण है होता,
हानिकारक तत्वों का मिलना।।

पर्यावरण प्रदूषण के होते हैं,
सुनिये कई प्रकार।
जल, वायु, मृदा और ध्वनि,
हैं ये मुख्य चार।।

जल, वायु और मिट्टी में होता,
है जब अवांछनीय परिवर्तन।
अन्य घटक हों इससे प्रभावित,
तब कहलाता है पर्यावरण प्रदूषण।।

जल प्रदूषण

जल में किसी प्रकार के,
हानिकारक तत्व मिल जाते।
जल की गुणवत्ता में कमी कर,
जल को प्रदूषित बनाते।।

घर के कामों में निकले कूड़ा-कचरा,
झीलों, तालाबों में जाकर वो पसरा।
कपड़े धोने, नहाने और शौच जाने में,
जल होता प्रदूषित पशुओं को नहलाने में।।

दूषित जल को पीने से फैलें बीमारी,
जल से फैलती हैजा, कालरा महामारी।
किसी जगह न हो बेवजह पानी का भराव,
मच्छरदानी से होगा मच्छरों से बचाव।।

नदी और तालाबों में भैया,
जानवरों को मत नहलाना।
प्रदूषणकारी तत्वों को कभी,
जल के भीतर मत बहाना।।

पाठ-09 भाग-02 पर्यावरण प्रदूषणः कारण एवं प्रभाव

वायु प्रदूषण

वायु मण्डल में बाह्य स्रोतों से,
जब हानिकारक तत्व मिलते हैं।
मानव जीवन और सम्पत्ति को हो नुकसान,
वायु प्रदूषण उसे कहते हैं।।

सड़क पर चलने वाले वाहन,
इनसे निकलता धुआँ है सघन।
कारखानों से निकलने वाले,
मिल जाते हानिकारक रसायन।।

फ्रिज, एयरकंडीशनर से निकलती,
'क्लोरोफ्लोरो कार्बन' गैस।
ओजोन परत का क्षरण होता है,
जब करती है वायु में प्रवेश।।

दिसम्बर 1984 में हुई थी,
भोपाल गैस त्रासदी।
यूनियन कार्बाइड कारखाने से रिसी,
मिथाइल आइसोसाइनाइट जहरीली।।

हवा में मिलने से जहरीली गैस,
हजारों लोगों की साँस में कर प्रवेश।
जानवर और मनुष्यों को क्षति कर दी,
दुखद घटना बनी भोपाल गैस त्रासदी।।

वायु प्रदूषण से बचने को,
करने होंगे उपाय जरूरी।
कारखाने और उद्योग-धन्धों की,
आबादी से हो उचित दूरी।।

कूड़े-कचरे, फसलों के डण्ठल,
इनको खेत में नहीं जलाएँ।
कीटनाशक रसायनों, खादों की जगह,
कम्पोस्ट खाद को प्रयोग में लाएँ।।

खाना बनाने मे लकड़ी की जगह,
ईंधन में लकड़ी का करें प्रयोग।
वाहनों को चलाने में डीजल की जगह,
करें सी० एन० जी० प्रयोग।।

पाठ-09 पर्यावरण प्रदूषण: कारण एवं प्रभाव
भाग-03

ध्वनि प्रदूषण

ध्वनि का जब कानों पर प्रतिकूल प्रभाव होता है,
मस्तिष्क पर असरकारी, ध्वनि प्रदूषण बनता है।
रेडियो, टी०वी० और पटाखों की ध्वनि से,
होता प्रदूषण सायरन, जनरेटर की ध्वनि से।।

पेड़ लगे होते जो सड़क किनारे,
वाहनों की ध्वनि अवशोषित करते सारे।
बड़े सहायक सभी के लिए सभी तरह से,
तभी इन्हें सब 'ग्रीन मफलर' पुकारें।।

ईंधन और बिजली को बचाएँ,
पर्यावरण को सुरक्षित बनाएँ।
हानिकारक चीजों को हम सब,
कम से कम प्रयोग में लाएँ।।

मृदा प्रदूषण

मृदा सभी जीवों की खातिर,
उपलब्ध कराती है भोजन।
इसकी गुणवत्ता घटती जब,
होता है तब मृदा प्रदूषण।।

खेतों में रसायनों का अधिक प्रयोग,
कचरा निकालते कारखाने और उद्योग।
घरों के अपशिष्ट और अम्ल-वर्षा भी,
बनाते हैं मृदा प्रदूषण का संयोग।।

प्लास्टिक थैले, डिटर्जेंट और,
पेन्ट, प्रशीतकों का करें प्रयोग अल्प।
प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन,
कम करें, लें वृक्षारोपण का सभी संकल्प।।

पाठ-10 भाग-01

पर्यावरण असन्तुलन-मानव हस्तक्षेप का परिणाम

जब बढ़ता मानव का अत्याचार,
तब लेती है प्रकृति रौद्र अवतार।
काट वनों को किया सूना संसार,
सूख चुकी है अब तो ये जलधार।।

पर्यावरण असन्तुलन के कारण,
आती हैं प्राकृतिक आपदाएँ।
सूखा, बाढ़, भूकम्प, आँधी और,
ज्वालामुखी आपदा कहलाएँ।।

लगातार वन काटने से,
शहरों का होता विस्तार।
पर्यावरण प्रदूषित होता,
प्रकृति हो रही तार-तार।।

बढ़ती जनसंख्या के कारण,
हुए भूमि, संसाधन कम।
हाँ, यदि अभी नहीं चेते तो,
आपदा में फँस जाएँगे हम।।

ऊर्जा और ईंधन

अलग-अलग रूपों में मिलती,
काम करने में मदद है करती।
जल और भोज्य पदार्थों के रूप में,
इस शरीर में संचित रहती।।

ऊर्जा से हम कर पाते हैं,
सुख-समृद्धियों का उपभोग।
ईंधन के माध्यम से पाकर,
करते सब ऊर्जा को प्रयोग।।

कण्डे, लकड़ी और कोयला,
डीजल या फिर हो पेट्रोल।
एल० पी० जी० या सौर ऊर्जा,
या हो फिर मिट्टी का तेल।।

इन्हें जलाकर मिलती ऊर्जा,
जिसको काम में लाते।
गाँवों में तो आज भी देखो,
पुआल, झाड़ियाँ जलाते।।

बहती वायु के द्वारा भी तो,
लोग पवन ऊर्जा बनाते हैं।
गोबर गैस संयन्त्र लगाकर,
सुरक्षित और सस्ता ईंधन पाते हैं।।

पाठ-10 भाग-02

पर्यावरण असन्तुलन-मानव हस्तक्षेप का परिणाम

जल और समुद्र

जल के बिना इस धरती पर,
नहीं सम्भव होगा जीना।
जीवित रहने की खातिर,
आवश्यक है जल पीना।।

तालाबों, झरनों, नदियों से,
हम सब जल हैं पाते।
दैनिक कामों को करते हैं,
पीते, धोते, नहाते।।

गंगा, यमुना, गोमती, घाघरा,
सरयू, गोदावरी निराली।
बहती नदियाँ कल-कल करती,
मैली हैं हमने कर डाली।।

जल का सबसे बड़ा स्रोत,
समुद्र है माना जाता।
प्रदूषित नदियों के मिलने से,
यह भी दूषित हो जाता।।

मानव ने धरती को किया जो,
तरह-तरह से प्रदूषित।
जाकर मिलने से इन सबके,
समुद्र भी हुआ है दूषित।।

वन

वन हैं हमारे जीवनदाता,
वन हम सबके भाग्यविधाता।
वन धरती को सब कुछ देते,
वनों से गहरा सबका नाता।।

ऑक्सीजन और ईंधन, भोजन,
इमारती लकड़ी वनों से पाते।
जड़ी-बूटियाँ, कागज, चूड़ी,
रबड़ का कारोबार चलाते।।

बढ़ती जनसंख्या के कारण,
वन कम हो रहे हैं पृथ्वी पर।
वन्य जीवों का आश्रय ये वन,
जो घुस आते बस्ती में घबराकर।।

वनों की अन्धाधुन्ध कटाई,
प्रकृति समस्या में है आयी।
लुप्त हुई हरियाली जब से,
मानवता खतरे में आयी।।

पाठ-11 जनसंख्या एवं हमारा पर्यावरण भाग-01

गाँव जगतपुर एक सुहावन,
जहाँ सबै सुख-सुविधा पावन।
शिक्षा, चिकित्सा या आवास,
खेतिहर भूमि भी सबके पास।।

धीरे-धीरे लोग बढ़े जब,
सुविधाओं कम हुईं वहाँ तब।
खेत, बाग, वन और सुविधाएँ,
लगातार कम पड़ती जाएँ।।

दस-पन्द्रह वर्षों के बाद,
होगी स्थिति बहुत खराब।
सर्वाधिक जनसंख्या भारत की,
विश्व में है सुनो, चीन के बाद।।

पेड़-पौधों, प्राकृतिक संसाधन,
और मानव तीनों से मिलकर।
प्रकृति बनाती है समायोजन,
वातावरण को संतुलित कर।।

बढ़ती हुई आबादी बनती,
पर्यावरण को खतरा भयंकर।
सीमित मात्रा में हैं संसाधन,
इनका मानव ने दुरूपयोग कर।।

ट्रेन, बसों में बढ़ती भीड़,
स्टेशन, अस्पताल की मारा-मारी।
शहरों में बसी झुग्गी बस्तियाँ,
जनसंख्या वृद्धि के कारण सारी।।

खेती योग्य भूमि पर बसते,
लोग बनकर निज आवास।
फिर खाने को अन्न खोजते,
करते कोई नहीं प्रयास।।

कम होते पेड़-पौधों के कारण,
वातावरण हो गया है गरम।
ग्रीन हाउस गैसों का ताप,
लगातार है खतरे में हरदम।।

जनसंख्या वृद्धि के कारण,
धरा पर पड़ता है कुप्रभाव।
खत्म हो गये जो ये वन तो,
नहीं मिलेगी ठण्डी छाँव।।

सोंच-समझकर चलो विचारें,
फिर इस धरा का रूप सँवारें।
काटे हैं जो हमने पेड़,
फिर से चलो उगाएँ सारे।।

पाठ-11 जनसंख्या एवं हमारा पर्यावरण भाग-02

बढ़ती जनसंख्या से होती प्रभावित,
बनी हैं जो इमारतें ऐतिहासिक।
जनसंख्या को नियन्त्रित करना,
अब तो हुआ बहुत आवश्यक।।

जन सामान्य को जागरूक करके,
इस समस्या को देश से मिटाएँ।
'छोटा परिवार,सुखी परिवार' इस,
बात का सार सभी को बताएँ।।

परिवार नियोजन के कार्यक्रमों को,
जन-मानस तक हम पहुँचाएँ।
बढ़ती आबादी कम करने को,
लोगों में जागरूकता फैलाएँ।।

बाल विवाह और बहु विवाह,
की गलत प्रथाएं बन्द करवाएँ।
निम्न वर्ग तक भी अब पहुँचें,
मनोरंजन और स्वास्थ्य सेवाएँ।।

जनसंख्या वृद्धि पर नियन्त्रण हेतु,
सरकारी संस्थान दायित्व निभाते हैं
हर वर्ष 11 जुलाई को हम सब,
विश्व जनसंख्या दिवस मनाते हैं।।

पाठ-12 ऊर्जा के स्रोत एवं सतत विकास भाग-01

पानी में कागज की नाव चलाना,
या हो हवा में फिरकी घुमाना।
एक पानी में, एक हवा में, इससे,
पानी, हवा की ऊर्जा को पहचानना।।

किसी काम को, किसी रुप में,
करने की जो क्षमता होती।
जीवन स्तर को बनाती बेहतर,
वहीं तो बच्चों! ऊर्जा होती।।

ऊर्जा के हैं कई संसाधन,
सूर्य के ताप में, बहते जल में।
भोज्य पदार्थों, वायु, पेड़-पौधों में,
होती सचित ऊर्जा जीवाश्म ईंधन में।।

ऊर्जा के होते दो प्रकार,
नव्यकरणीय व अनव्यकरणीय।
जल, वायु और सूर्य की ऊर्जा,
होती है नव्यकरणीय।।

अनव्यकरणीय वह ऊर्जा होती,
जिसका हो न उपयोग दोबारा।
ये हैं कोयला, पेट्रोल, डीजल,
प्राकृतिक गैस, मिट्टी का तेल हमारा।।

अब हम जानेंगे ऊर्जा के,
होते हैं जो, सभी प्रकार।
काम में लाते कैसे ऊर्जा?
करती कैसे ऊर्जा कार्य?

पाठ-12 ऊर्जा के स्रोत एवं सतत विकास भाग-02

जल ऊर्जा

जल को पीते, सिंचाई करते,
कपड़े धोते और नहाते।
बाँध बनाकर नदियों पर हम,
विद्युत ऊर्जा को हैं बनाते।।

'भाखड़ा नांगल', हीराकुण्ड बाँध,
भारत की कुछ जल परियोजनाएं,
सरदार सरोवर परियोजना और,
'दामोदर नदी' आदि बिजली बनाएँ।।

ज्वारीय ऊर्जा

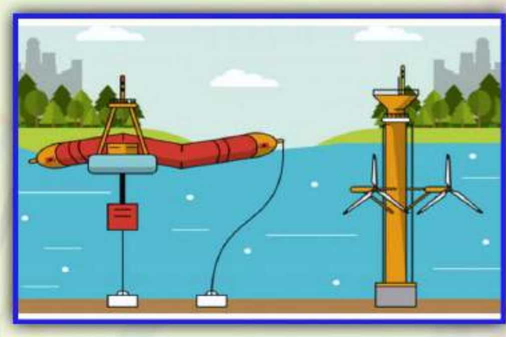

समुद्र में ज्वार-भाटा आने से,
जल की उठती गिरती लहरें।
लहरों से निकलने वाली ऊर्जा,
टर्बाइन से बनती ज्वरीय ऊर्जा।।

बायोगैस ऊर्जा

गोबर और कृषि अपशिष्ट की,
सहायता से बनती बायोगैस ऊर्जा।
घरेलू ईंधन का काम करती है,
प्रकाश करती, इंजन चलाती यह ऊर्जा।।

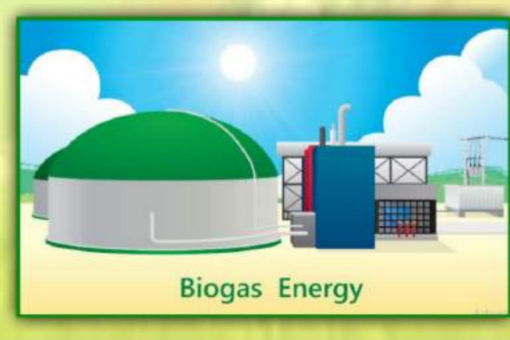

पाठ-12 ऊर्जा के स्रोत एवं सतत विकास भाग-03

प्राकृतिक गैस, कोयला, डीजल और पेट्रोल,
ऊर्जा के ये संसाधन सारे अनमोल।
सौर ऊर्जा इको फ्रेंडली सर्वोत्तम तकनीक,
पर्यावरण सुरक्षित रहता, ये ऐसी तकनीक।।

जल, मिट्टी और खनिज संसाधन,
सीमित और अमोल है कण-कण।
समझदारी से करें प्रयोग,
मिलकर आओ कर लें प्रण।।

हरे वनों की हर ली शोभा,
धरती को सूना कर डाला।
विलासिता और लोभ में पागल,
मानव तूने क्या कर डाला?

पानी और हवा को बचाएँ,
धरती पर हरियाली बढ़ाएँ।
मरते-तड़पते जंगली जीव,
उनको आश्रय हम दिलवाएँ।।

आने वाली तेरी पीढ़ी,
प्यासी ही रह जाए ना।
बिन पेड़ों के साँसें सबकी,
कहीं कभी रूक जाएँ ना।।

सोंच-विचाओ जरा ये बातें,
क्या देकर तुम जाओगे?
अपने क्रियाकलापों से यह,
धरती बाँझ बनाओगे?

रखें बचाकर बिजली, पानी
जल और भूमि, वातावरण हवादार।
भावी पीढ़ी की खातिर,
होगा यह सर्वोत्तम उपहार।।

पाठ-13 आपदाएँ एवं उनका प्रबन्धन भाग-01

घटने वाली पर्यावरणीय बुरी घटनाएँ,
कहलाती हैं प्राकृतिक आपदाएँ।
आँधी, भूकम्प, बाढ़, ज्वालामुखी,
महामारी आदि मानवीय आपदाएँ।।

मानव और प्रकृति दोनों के,
आपदाएँ जन्मती चरम कर्म से।
प्रलय, विनाश की स्थिति होती,
जन और धन की है क्षति होती।।

प्राकृतिक और मानव जनित आपदाएँ,
दो ये प्रमुख प्रकार कहलाएँ।
भूकम्प, ज्वालामुखी, भूस्खलन,
बाढ़,सूखा आदि प्राकृतिक आपदा कहलाएँ।।

बमों का विस्फोट व गैस रिसाव,
आग लगना और महामारी फैलाव।
मानव जनित आपदाओं के प्रकार,
बहुत जरूरी है उनसे बचाव।।

पाठ-13 ऊर्जा के स्रोत एवं सतत विकास भाग-02

भूकम्प

धरती के भीतर की चट्टानें,
जब हैं टूटती और फूटती।
धरती अचानक कम्पन करती,
भूकम्प की स्थिति है तब बनती।।

ज्वालामुखी

पृथ्वी के भीतरी ताप से गलकर,
चट्टानें पिघलती हैं लावा बनकर।
जहाँ धरा की कमजोर हो सतह,
ज्वालामुखी बनता है वही फूटकर।।

बाढ़

जब-जब होती है अधिक बरसात,
धरती पर हो जाता जल-भराव।
बाढ़ से होती जन-धन हानि,
बेहाल हो जाता जन-सामान्य।।

महामारी

फैलती जब है कोई बीमारी,
असहाय हो जाती जनता सारी।
बचाव और उपचार न मिलता,
कहलाती है वह महामारी।।

हैजा, एड्स, बीमारी इबोला,
आदि का जैसे हुआ प्रसार।
वैसे ही अब फैला कोरोना,
नहीं सूझता कोई उपचार।।

अधिक जनसंख्या, पेड़ों का कटना,
स्वच्छता के भी उपाय न करना।
संसाधनों की मारा-मारी,
होती इन्हीं से सारी बीमारी।।

समय के रहते यदि हम जागें,
करें संसाधनों का सही प्रयोग।
वृक्ष लगा हरियाली लाएँ,
रखें धरा और खुद को निरोग।।